अर्थव्यवस्था विषय पढ़ने का सही तरीका (Right way to study Economy subject)

"……Is pdf ko samajhne ke lie live crash course ke video jarur dekhein……"

- अर्थव्यवस्था पढ़ने का सही तरीका क्या होना चाहिए? इसके उत्तर के लिए हमे सर्वप्रथम अर्थव्यवस्था के सद्चक्र एवं दुष्चक्र (Virtuous and Vicious Cycle of Economy) को समझना पड़ेगा।

1. **अर्थव्यवस्था के सद्चक्र (Virtuous Cycle of Economy)**- उत्पादनकर्ता(Producer) जब वस्तु एवं सेवाओं की वृद्धि करता है तो राष्ट्र के श्रम बाजार (अर्थात् वह जनसंख्या जो उत्पादन मे भागीदारी सुनिश्चित कर सकती है) मे हमे रोजगार(employment) मे वृद्धि होती हुई दिखेगी, जिससे देश के निवासियों की आय बढ़ेगी, लोग अपने आय के कुछ हिस्से का प्रयोग अपने उपभोग के वस्तु एवं सेवाओं की खरीदी के लिए करेंगे, जिससे बाजारों मे मांग पर वृद्धि दिखेगी और साथ ही उत्पादनकर्ता को लाभ प्राप्त होगा एवं मांग की पूर्ति के लिए पुन: उत्पादन करेगा इस प्रकार से यह पूरी आर्थिक गतिविधी एक चक्र के रूप मे देखी जा सकती है, अर्थात् उत्पादन मे वृद्धि ही उत्पादन मे वृद्धि का कारक बनता है और इसे चक्र 1 (Cycle 1) का नाम देते है।

   a) चक्र 1 (Cycle 1) :

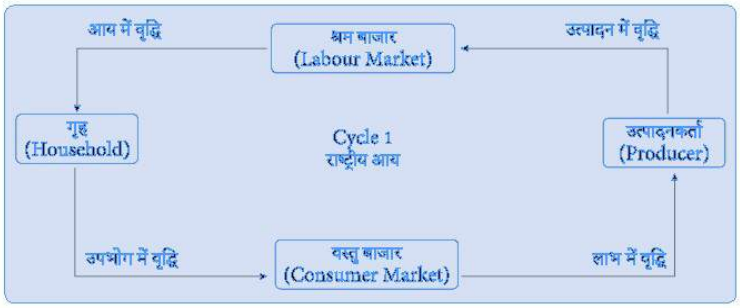

   चक्र 1 (Cycle 1) का अध्ययन हम सामन्य रूप से 'राष्ट्रीय आय' Topic के नाम से करते हैं, जहाँ GDP मे वृद्धि (उत्पादन मे वृद्धि) से शुरूआत करते हुए प्रति व्यक्ति आय मे वृद्धि तक पहुँचते है, विस्तारपूर्वक हम इसे इस पुस्तक के अध्याय 3 मे पढेंगे।

   b) चक्र 2 (Cycle 2) :

- लोगो की आय का कुछ हिस्सा सरकार तक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीकों से पहुँचेगा जैसे की करो के माध्यम से, सरकार की वस्तु एवं सेवाओं (जैसे रेल यात्रा) की खरीदी से, और सरकार इन राजस्व के माध्यम से आधारभूत संरचनाओं का निर्माण कर उत्पादन करेगी या उत्पादनकर्ता के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए या मुख्य रूप से समाज कल्याण के लिए प्रयत्नों पर व्यय करेगी।

- इस प्रकार यह एक अन्य चक्र के रूप में देखा जा सकता है, अर्थात् उत्पादन में वृद्धि से सरकार की आय मेंे वृद्धि होगी जो पुन: उत्पादन की वृद्धि का कारक होगा, इसे हम Cycle 2 का नाम देते है।

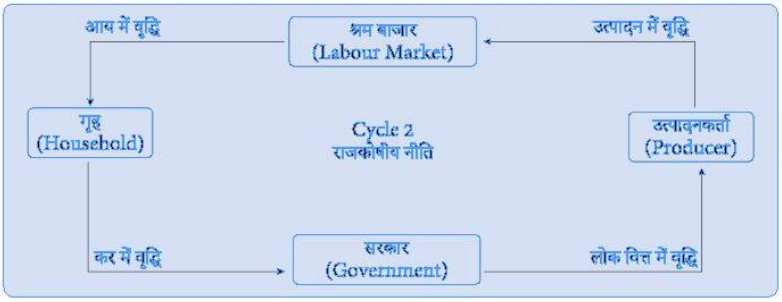

- Cycle 2 का अध्ययन हम सामान्य रूप से 'राजकोषीय नीति' Topic के नाम से करते हैं, जहाँ GDP में वृद्धि (उत्पादन में वृद्धि) से शुरूआत करते हुए सरकार की आय एवं वार्षिक व्ययों तक पहुँचते हैं, इसे विस्तार पूर्वक इस पुस्तक के अध्याय - 4 में पढ़ेगें।

c) चक्र 3 (Cycle 3) :

Competition Wallah

- लोगों की आय का कुछ हिस्सा बाजार में मांग में वृद्धि और कुछ हिस्सा सरकार की आय में वृद्धि के रूप में दिखा। ठीक उसी प्रकार कुछ हिस्सा बचत के रूप में वित्तीय संस्थाओं में पहुंचेगा, जिसे उत्पादनकर्ता उधार लेकर निवेश में वृद्धि करेगा जिससे पुन: उत्पादन में वृद्धि से वित्तीय संस्थाओं में बचत में वृद्धि होगी, जिससे उत्पादन में वृद्धि होगी। इम इसे Cycle 3 का नाम देते है।

- Cycle 3 का अध्ययन हम सामान्य रूप से 'मुद्रा, मुद्रास्फीति एवं बैंकिंग क्षेत्र' Topic के नाम से करते है, इसे विस्तार पूर्वक इस पुस्तक के अध्याय 5 मे पढेंगे।

d) चक्र 4 (Cycle 4) :

- लोगो की आय से ही किसी राष्ट्र का आयात निर्भर करता है, आय मे वृद्धि होने पर दूसरे राष्ट्रों की उच्च गुणवत्ता वाले वस्तुओं की मांग बढ़ती है आैर आयात मे वृद्धि होती है उच्च गुणवत्ता वाले वस्तुओं के आयात से अच्छी तकनीक भी देश में प्रवेश करती है जिससे घरेलू उत्पादन में भी उच्च गुणवत्ता वाले वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि होती है और अगर हम भी उच्च गुणवत्ता वाले वस्तुओं के उत्पादन करेंगे तो हमारा निर्यात बढ़ेगा, जिससे पुन: उत्पादन मे वृद्धि होगी। हम इसे Cycle 4 का नाम देते है।

- Cycle 4 का अध्ययन हम सामान्य रूप से 'भुगतान का संतुलन' Topic के नाम से करते है, जहाँ आयात और आयात मे वृद्धि से उत्पादन मे वृद्धि तक पहुँचेंगे।

अगर हम सभी च्रकों को जोड़ दे तो हमे एक वृहद चक्र मिलेगा

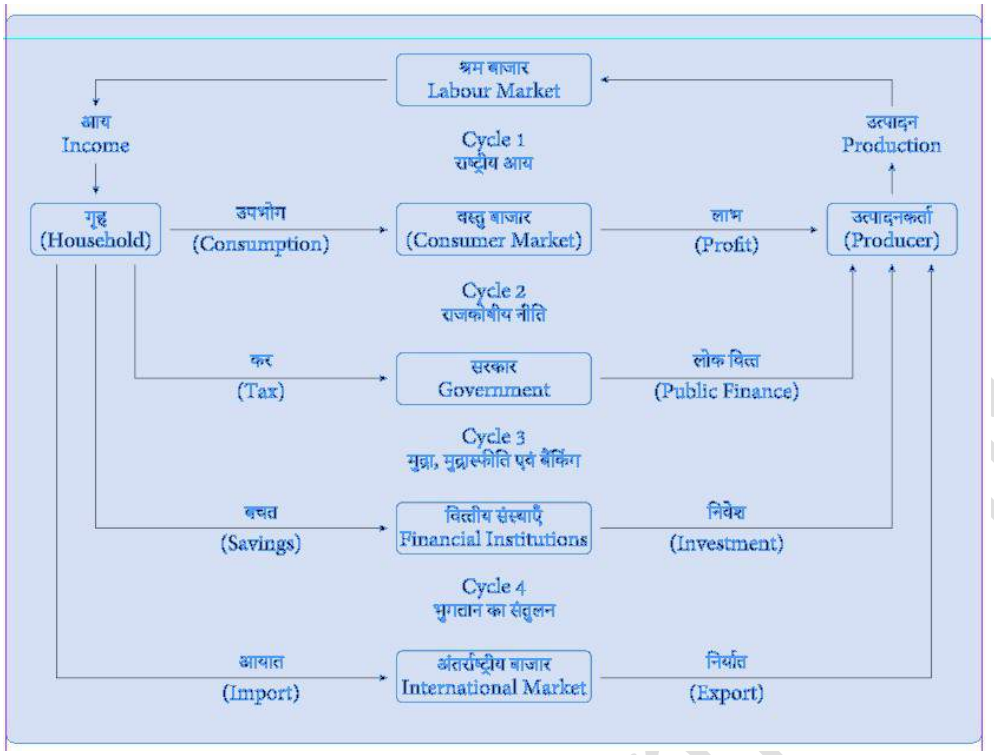

- इस वृहद चक्र को आप इस प्रकार समझ सकते है कि उत्पादन मे वृद्धि ही अन्य कारकों के माध्यम से (चक्र 1, 2, 3, 4) उत्पादन मे वृद्धि का कारक बनता है।
- जब यह चक्र सकारात्मक दिशा से अग्रसर होता है तो हम इसे 'अर्थव्यवस्था का सद्चक्र' कहते है।
- अभी तक हमने अर्थव्यवस्था के सद्चक्र को समझा और यह निष्कर्ष निकाला की सभी चक्र आपस मे जुड़े और अंतत: सभी Topic भी आपस भी जुड़े है।

अर्थव्यवस्था के सद्चक्र (Virtuous Cycle of Economy)

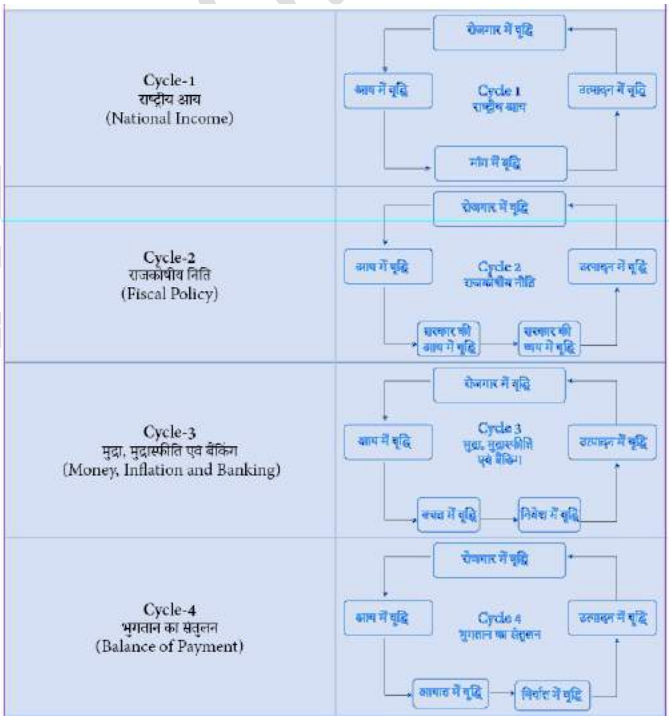

2. अर्थव्यवस्था के दुष्चक्र (Vicious Cycle of Economy) - उत्पादनकर्ता जब वस्तू एवं सेवाओं की कमी करता है, तो राष्ट्र के श्रम बाजार में हमें रोजगार में भी कमी होती हुई दिखेगी जिससे निवासियों की आय घटेगी और लोग उपभोग के लिए वस्तु एवं सेवाओं की खरीदी में भी कमी करेंगे, जिससे बाजारों में मांग में कमी दिखेगी और साथ ही उत्पादनकर्ता को भी हानि होगा एवं मांग की पूर्ति के लिए उत्पादनकर्ता पुन: उत्पादन नहीं करेगा।

   इसी प्रकार उत्पादन में कमी के कारण सरकार की आय में कमी होगी जिससे सरकार राजस्व के माध्यम से आधारभूत संरचनाओं के निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण बनाने में असमर्थ रहेगी।

   ठीक उसी प्रकार वित्तीय संस्थाओं की बचत की कमी होगी जिससे उत्पादनकर्ता उधार ले कर निवेश करने में अक्षम होगा जिससे पुन: उत्पादन में कमी से वित्तीय संस्थाओं की बचत में कमी होगी।

   लोगो की आय से ही किसी राष्ट्र का आयात निर्भर करती है, आय में कमी होने पर दूसरे राष्ट्रों की उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुओं की मांग घटती है और आयात में कमी होती है और यदि हम भी उच्च गुणवत्ता वाले वस्तुओं का उत्पादन नहीं करेंगे तो हमारी निर्यात घटेगी जिससे पुन: उत्पादन में कमी होगी।

- उदाहरण के लिए हम विमुद्रीकरण के अल्पकालीन नकारात्मक प्रभाव पर नजर डालते हैं, ₹500 और ₹1000 के नोटो के विमुद्रीकरण के पश्चात् लोगो के पैसे बैंको मे जमा हो गये थे और बैंक ATM के सामने लंबी कतार मे खड़े रहने के पश्चात् एक सीमित राशि ही प्राप्त होती थी जिसका उपयोग लोग केवल उन उत्पादों को खरीदने पर करते थे जो अति महत्वपूर्ण थे जैसे कि खाद्य उत्पाद और बाकी उत्पादों के मांग के कमी के कारण उत्पादन वृद्धि दर मे कमी दर्ज, जिससे रोजगार और लोगो की आय मे भी कम वृद्धि देखी गई, इस प्रकार से हमने Cycle 1 पर विमुद्रीकरण का प्रभाव देख लिया, अब इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए Cycle 2 समझते है, लोगो की आय के कमी से सरकार की आय मे भी कमी देखी गई।

- Cycle 3 पर जाए तो आप पाएंगे की लोगो की आय मे कमी से बचत मे कमी हुई, मांग मे कमी से निवेश मे भी कमी देखी गई। Cycle 4 पर जाएं तो लोगो की आय में कमी से आयात में भी कमी देखी गई और जिससे भुगतान के संतुलन पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

अर्थव्यवस्था के दुष्चक्र (Vicious Cycle of Economy)

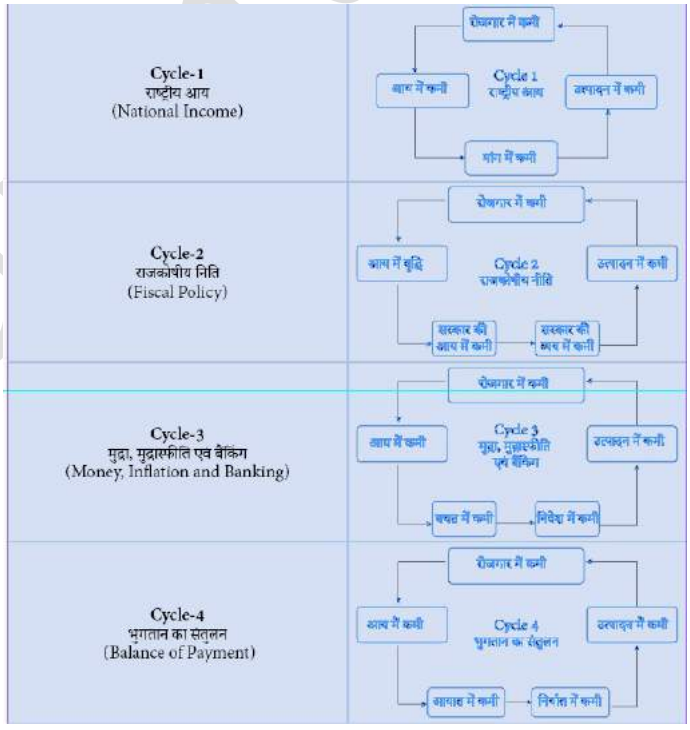

- **अर्थात् अर्थव्यवस्था पढ़ने का सबसे बेहतर तरीका है-**

1. सभी चक्रो को एक साथ जोड़ कर पढ़ना एवं समझना।

Competition community

2. Static (जो कभी ना बदले) एवं Dymamic (जो बदलता रहे) दोनो पहलुओं को एक साथ पढ़ना।
3. बेहतर समझ विकसित करने के लिए आर्थिक गतिविधियों को News paper, Magazine आदि से Update करते रहना।
4. Syllabus के दृष्टि से, परीक्षा में आए प्रश्नों के दृष्टि से एंव सम्पूर्ण विषय को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product) -

- देश की घरेलू सीमा के अन्दर एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के अन्तिम मौद्रिक मूल्य के योग को सकल घेरलू उत्पाद (Gross Domestic Product) कहते है।
- इसमें इस बात का ध्यान नहीं रखा जाता कि उत्पादन किसी देशवासी द्वारा हो रहा है या किसी विदेशी द्वारा, परन्तु उत्पादन देश की भौगोलिक सीमा के अन्दर होना आवश्यक है। भारत में सकल घरेलू उत्पाद की गणना का काम केन्द्रीय सांख्यिकीय एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (CSO) द्वारा किया जाता है।
- **महत्व (Importance)-**
  - यह किसी देश की वृद्धि दर को दर्शाता है।
  - मात्रात्मक दृष्टिकोण है(quantitative aspect)।
  - आंतरिक स्थिति(internal strength) को प्रदर्शित करता है।
  - रैंकिंग के माध्यम से तुलनात्मक विश्लेषण(comparative analysis) में आईएमएफ/वर्ल्ड बैंक द्वारा प्रयोग किया जाता है।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product) -

- किसी देश के नागरिकों द्वारा एक निश्चित समयावधि सामान्यत: एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के अंतिम मौद्रिक मूल्य को सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product) कहते है।

इसमें देश की सीमा से बाहर होने वाली आर्थिक गतिविधियों को भी शामिल किया जाता है

क्र.	अंतर का आधार	GDP	GNP
1	अर्थ	किसी देश में, निर्धारित वर्ष में देश की भौगोलिक क्षेत्र के भीतर उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य का योग है।	किसी देश में एक निर्धारित वर्ष में देश के नागरिकों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्यों का योग है।
2	महत्व	जी.डी.पी. में उत्पादन कहाँ हो रहा है? यह महत्वपूर्ण होना है न कि कौन कर रहा है।	जी.एन.पी. में उत्पादन कौन कर रहा है? यह महत्वपूर्ण है। उत्पादन कहाँ हो रहा है? यह महत्वपूर्ण नहीं है। यह आंतरिक एवं बाह्य स्थिति प्रदर्शिता करता है।
3	निर्भरता स्थिति	देश की आंतरिक स्थिति प्रदर्शित करता है।	यह आंतरिक एवं बाह्य स्थिति प्रदर्शित करता है।

Competition community

4	दृष्टिकोण	मात्रात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करता है।	मात्रात्मक एवं गुणात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करता है।
5	योगदान	इसमें केवल अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं की गणना की जाती है। इसमें कच्चे माल, बिजली, ईंधन जैसी मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्योंमें शामिल नही किया जाता है।	राष्ट्रीय आय में उन सभी साधनों का सक्रीय सहयोग होना है, जो राष्ट्र के समान उत्पादन के लिए आवश्यक है।

Competition community